कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (88) खण्ड - {175}

समग्र

मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.........

प्रश्न 1- तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट -

A- तुम सबको ईश्वर का बनाते हो

B- देवता बनने का रास्ता बताते हो

C- बाप के साथ, जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो

D- तुम ही 84 जन्म लेते हो

प्रश्न 2- सर्वोत्तम पुरूषार्थी अर्थात् -

A- आलराउंड सेवा धारी

B- जो अनेकों को आप समान बनाते

C- जिनका सोचना बोलना करना एक समान हो

D- अष्ट रत्न में आने वाले

प्रश्न 3- आत्मा को सतो प्रधान बनाने के लिए -

A- हर संकल्प श्रेष्ठ हो

B- पढ़ाई कभी भी मिस न हो

C- देही अभिमानी बनने का पूरा पूरा पुरुषार्थ करो

D- पवित्र बन पक्का वैष्णव बनना है

प्रश्न 4- धर्म-स्थापक के बारे में सत्य नहीं है -

A- विनाश नहीं करते हैं

B- गुरू भी नहीं हैं

C- सद्गति दाता भी नहीं है

D- ज्ञान दाता है

प्रश्न 5- बाप बैठ समझाते हैं - अखिर वह दिन आया आज। कौन-सा दिन ?

A- पुरुषोत्तम संगमयुग का

B- जो बाप आया है पढ़ाने

C- पतित से पावन बनने का

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न 6- हर एक मनुष्य क्या पसन्द करते हैं ?

A- सुख-शान्ति

B- मान सम्मान

C- धन वैभव

D- सन्तुष्टि खुशी

प्रश्न 7- अन्दर में नशा रहना चाहिए-

A- हम शिवबाबा के साथ आये हैं दैवी राज्य स्थापन करने

B- हम ही विश्व के मालिक थे

C- अब हम अपने घर जायेंगे

D- मुझे भगवान ने पसन्द किया है

प्रश्न 8- कहाँ हर एक की सेफ्टी है ?

A- स्वर्ग में

B- अभी यहाँ

C- घर में

D- शान्तिधाम

प्रश्न 9- तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा के बनते हो, इसको क्या कहा जाता है ?

A- आत्म अभिमानी

B- जीते जी मरना

C- बेहद का संन्यास

D- ट्रस्टी बन रहना

प्रश्न 10- बेहद के बाप से क्या नसीब होता है ?

A- भाग्य

B- स्वर्ग (बहिश्त)

C- सुख

D- धन

प्रश्न 11- बहुत तेज तूफ़ान है -

A- काम महाशत्रु का

B- देह अभिमान का

C- मैंपन का

D- लोभ का

प्रश्न 12- सेवा में निमित्त बनना अर्थात् -

A- दुआओं के पात्र बनना

B- अविनाशी खुशी मिलना

C- बाप के मददगार बनना

D- स्टेज पर आना

प्रश्न 13- भगवान विश्व का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं, ऐसी पढ़ाई को छोड़ दे तो उनको कहा जाता है ...

A- संशय बुद्धि

B- पत्थरबुद्धि

C- महामूर्ख

D- नास्तिक

प्रश्न 14- वर्तमान समय भटकती हुई आत्माओं को क्या चाहिए ?

A- शान्ति चाहिए

B- रूहानी स्नेह

C- सुख चाहिए

D- A और B

E- A , B और C

प्रश्न 15- बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और -

A- आत्मा भाई को ज्ञान सुनाओ

B- पढ़ाई पढ़ो

C- मुरली सुनो

D- बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो

प्रश्न 16- मुरली कैसे सुनो ?

A- गाडली स्टूडेंट्स की स्मृति में

B- ज्ञान को बुद्धि में धारण कर

C- आत्मा समझ कर

D- तुम सुनाने वाली टीचर के नाम-रूप को न देख, बाप की याद में रहो

भाग (88) खण्ड {175} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *C.बाप के साथ,जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो*

यह बेहद का ड्रामा है। *तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट बाप के साथ, जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो।* यह है पुरुषोत्तम संगम युग। अब तुम सुखधाम के मालिक

बनते हो। वहाँ दु:ख का नाम-निशान नहीं होगा। बाप है ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता। दु:ख से आकर लिबरेट करते हैं।

उत्तर 2- *C.जिनका सोचना बोलना करना एक समान हो*

स्लोगन:- *सोचना-बोलना और करना तीनों को एक समान बनाओ - तब कहेंगे सर्वोत्तम पुरुषार्थी।*

उत्तर 3- *C.देही-अभिमानी बनने का पूरा पुरुषार्थ करो*

पहले तो वह श्रीमत देते हैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाने के लिए। तो मत पर चलना चाहिए ना। पहली-पहली मत देते हैं - देही-अभिमानी बनो। श्री श्री की श्रेष्ठ मत पर पूरा-पूरा चलना है। *आत्मा को सतोप्रधान बनाने के लिए देही-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है।*

उत्तर 4- *D.ज्ञान दाता हैं*

यहाँ इन अनेक धर्मों का कितना घमसान है। बाप कहते हैं इन सबको मैं खलास कर देता हूँ। सबका विनाश होना है और धर्म-स्थापक विनाश नहीं करते हैं। वह सद्गति देने वाले गुरू भी नहीं हैं। *सद्गति ज्ञान से ही होती है। सर्व का सद्गति दाता ज्ञान-सागर बाप ही है।* यह अक्षर अच्छी रीति नोट करो।

उत्तर 5- *D. A और B*

आखिर वह दिन आया आज। कौन-सा दिन? पुरुषोत्तम संगमयुग का। जिसका कोई को पता नहीं है। *आखरीन वह दिन आया जो बाप आया है पढ़ाने।* वही पतित-पावन है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अभी है कलियुग का अन्त। थोड़ा टाइम भी चाहिए ना, पावन बनने के लिए।

उत्तर 6- *A.सुख शान्ति*

कहते हैं बाबा दु:ख हरकर सुख दो। *हर एक मनुष्य सुख-शान्ति ही पसन्द करते हैं।* बाप है भी गरीब निवाज़। इस समय भारत बिल्कुल गरीब है। बच्चे जानते हैं हम बिल्कुल साहूकार थे। यह भी तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो, बाकी तो सब जंगल में हैं। तुम बच्चों को भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निश्चय है।

उत्तर 7- *A.हम शिवबाबा के साथ आये हैं दैवी राज्य स्थापन करने*

तुम भी समझो हम बाप के साथ दूरदेश से आये हैं। बाप आये ही हैं नई दुनिया स्थापन करने। तुम भी कर रहे हो। जो स्थापना करेंगे वह पालना भी करेंगे। *अन्दर में नशा रहना चाहिए - हम शिवबाबा के साथ आये हैं दैवी राज्य स्थापन करने,* सारे विश्व को स्वर्ग बनाने।

उत्तर 8- *A.स्वर्ग में*

बेहद के बाप को बच्चों का फुरना रहता है। कितने सेन्टर्स हैं, किस बच्चे को कहाँ भेजना है जो सेफ्टी में रहें। आजकल सेफ्टी भी मुश्किल है। दुनिया में कोई भी सेफ्टी नहीं है। *स्वर्ग में तो हर एक की सेफ्टी है।* यहाँ कोई की सेफ्टी नहीं है। कहाँ न कहाँ विकारों रूपी माया के चम्बे में फंस पड़ते हैं।

उत्तर 9- *B.जीते जी मरना*

जीते जी मरना है, सारी दुनिया को भूल जाना है। *तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा के बनते हो, इसको जीते जी मरना कहा जाता है।* देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझ शिवबाबा का बन जाना है। शिवबाबा को ही याद करते रहना है क्योंकि पापों का बोझा सिर पर बहुत है।

उत्तर 10- *B.स्वर्ग (बहिश्त)*

नये को पहले-पहले एक हद के, दूसरा बेहद के बाप का परिचय देना है। *बेहद के बाप से स्वर्ग (बहिश्त) नसीब होता है।* हद के बाप से दोज़क (नर्क) नसीब होता है। बच्चा जब बालिग बनता है तो प्रापर्टी का हकदार बनता है। जब समझ आती है फिर धीरे-धीरे माया के अधीन बन पड़ते हैं। वह सब है रावण राज्य (विकारी दुनिया) की रस्म रिवाज़।

उत्तर 11- *A.काम महाशत्रु का*

तुम जानते हो हमको इस मायावी दुनिया से पार जाना है। सबसे पहले नम्बर में तूफान आता है देह-अभिमान का। वह है सबसे बुरा, इसने ही सबको पतित बनाया है। *तब तो बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। यह जैसे बहुत तेज़ तूफान है।* कोई तो इन पर जीत पाये हुए भी हैं।

उत्तर 12- *D.स्टेज पर आना*

निमित्त भाव से अनेक प्रकार का मैं पन, मेरा पन सहज ही खत्म हो जाता है। यह स्मृति सर्व प्रकार की हलचल से छुड़ाकर अचल-अडोल स्थिति का अनुभव कराती है। सेवा में भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्योंकि निमित्त बनने वालों की बुद्धि में सदा याद रहता है कि जो हम करेंगे हमें देख सब करेंगे। *सेवा के निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर आना।*

उत्तर 13- *C.महामूर्ख*

बाप आकर घोर अन्धियारे से घोर सोझरा करते हैं। फिर भी कोई-कोई बाबा कहकर फिर मुँह मोड़ देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। भगवान विश्व का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं, *ऐसी पढ़ाई को छोड़ दे तो उनको कहा जाता है महामूर्ख।* कितना जबरदस्त खज़ाना मिलता है। ऐसे बाप को थोड़ेही कभी छोड़ना चाहिए।

उत्तर 14- *D. A और B*

वर्तमान समय भटकती हुई आत्माओं को एक तो शान्ति चाहिए, दूसरा रूहानी स्नेह चाहिए। प्रेम और शान्ति का ही सब जगह अभाव है इसलिए जो भी प्रोग्राम करो उसमें पहले तो बाप के सम्बन्ध के स्नेह की महिमा करो और फिर उस प्यार से आत्माओं का सम्बन्ध जोड़ने के बाद शान्ति का अनुभव कराओ। प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप दोनों का बैलेन्स हो।

उत्तर 15- *D.बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो*

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण हो। यह बातें नया कोई आये तो समझ न सके। तुम हो सर्वोत्तम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी।

उत्तर 16- *D.तुम सुनाने वाली टीचर के नाम-रूप को न देख बाप की याद में रह मुरली सुनो*

कई बच्चों में अहंकार आता है कि यह छोटी-छोटी बालकियाँ हमें क्या समझायेंगी। बड़ी बहन चली गई तो रूठकर क्लास में आना बंद कर देंगे। यह हैं माया के विघ्न। *बाबा कहते - बच्चे, तुम सुनाने वाली टीचर के नाम-रूप को न देख, बाप की याद में रह मुरली सुनो।* अहंकार में मत आओ।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (88) खण्ड - {176}

प्रश्न 1- याद में कब रह सकेंगे -

A- अटेन्शन रखने से

B- चार्ट रखने से

C- पवित्र रहने से

D- आत्मिक स्थिति के अभ्यास से

प्रश्न 2- सद्गति के स्थान हैं -

A- मुक्तिधाम

B- जीवन मुक्तिधाम

C- मधुबन

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न 3- तुमको बाप कहते हैं शरीर छूटे तो -

A- स्वदर्शन चक्रधारी हो

B- बुद्धि में बाप और चक्र याद हो

C- बस हम तो बाबा के बन गये, दूसरा न कोई।

D- उपर्युक्त सभी

प्रश्न 4- किस की पूजा 12 मास में एक बार करते हैं ?

A- लक्ष्मी

B- जगत अम्बा

C- सालिग्राम

D- श्री कृष्ण

प्रश्न 5- शादी को जैसे कि अच्छा शुभ कार्य समझते हैं। जहन्नुम में जाने का भी दिन मनाते हैं। जहन्नुम अर्थात्-

A- नर्क

B- कलियुग

C- विकारी दुनिया

D- पुरानी दुनिया

प्रश्न 6- पुरूषोत्तम युग है -

A- सतयुग

B- संगमयुग

C- त्रेता युग

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न 7- बाप को अपना चोला तो है नहीं, इसलिए क्या कहा जाता है ?

A- बिन्दी

B- ज्योतिर्लिंग

C- निराकार गॉड फादर

D- शिव बाबा

प्रश्न 8- सम्पूर्ण शान्ति कहाँ होती है ?

A- निर्वाण धाम में

B- त्रेतायुग में

C- सतयुग में

D- A और C

प्रश्न 9- सदा स्मृति रखनी है कि हम-

A- हम आत्मा हैं

B- अब घर जाना है

C- ईश्वरीय सन्तान हैं

D- बेहद के वैरागी हैं

प्रश्न 10- तुम्हें कभी अशान्त नहीं होना चाहिए क्योंकि -

A- तुम शांति के सागर की संतान हो

B- आत्माओं का स्वधर्म शान्ति है

C- तुम विश्व में शान्ति स्थापन करने के निमित्त हो

D- शान्ति तुम्हारे गले का हार है

प्रश्न 11- बाप का मुख्य फरमान है -

A- अमृतवेले उठकर बाप को याद करो

B- बाप कहते हैं सिर्फ अपने स्वधर्म में टिको

C- विचार सागर मंथन तुमको करना है

D- पावन जरूर बनना है

प्रश्न 12- कपूत बच्चे जा कर -

A- भरी ढोयेंगे

B- झाड़ू लगायेंगे

C- प्रजा में नौकर चाकर बनेंगे

D- दास दासी बनेंगे

प्रश्न 13- सही महावाक्य पहचानिए ?

A- तुमने ही 84 का चक्र लगाया है

B- सब सूर्यवंशी भी 84 जन्म का चक्र लगाते हैं

C- सतयुग में है डीटी डिनायस्टी रावण राज्य में

फिर है आसुरी डिनायस्टी

D- A और C

प्रश्न 14- कौन सा पक्का अभ्यास चाहिए ?

A- एक बाप दूसरा न कोई

B- हम आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं

C- सब आसुरी आदतें मिटानी हैं

D- बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो

प्रश्न 15- यहाँ विकार में गया तो -

A- सौ गुना दण्ड पड़ जाएगा

B- पद भ्रष्ट होगा

C- धारणा नहीं होगी

D- ब्राह्मण नहीं ठहरा

प्रश्न 16- जहां भय है वहाँ -

A- शांति नहीं हो सकती

B- सुख नहीं हो सकता

C- चैन नहीं हो सकता

D- खुशी नहीं हो सकती

भाग (88) खण्ड {176} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *C.पवित्र रहने से*

जितना हो सके कैसे भी याद करना है तब ही सतोप्रधान, 16 कला बनेंगे। पवित्रता के साथ याद की यात्रा भी चाहिए। *पवित्र रहने से ही याद में रह सकेंगे।* यह प्वाइंट अच्छी रीति धारण करो। बाप कितना निरहंकारी है। आगे चल तुम्हारे चरणों में सब झुकेंगे। कहेंगे बरोबर यह मातायें स्वर्ग का द्वार खोलती हैं।

उत्तर 2- *D. A और B*

ज्ञान से ही मनुष्य की सद्गति होती है। *सद्गति के स्थान हैं दो - मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम।* अभी तुम बच्चे जानते हो यह राजधानी स्थापन हो रही है, परन्तु गुप्त। बाप ही आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं, तो सब अपने-अपने मनुष्य चोले में आते हैं। बाप को अपना चोला तो है नहीं, इसलिए इनको निराकार गॉड फादर कहा जाता है।

उत्तर 3- *D.उपरोक्त सभी*

तुमको बाप कहते हैं शरीर छूटे तो भी स्वदर्शन चक्रधारी हो। बुद्धि में बाप और चक्र याद हो। सो जरूर जब पुरुषार्थ करते रहेंगे तब तो अन्तकाल याद आयेगी। अगर पक्का निश्चय बुद्धि है तो। *बस हम तो बाबा के बन गये, दूसरा न कोई* फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी।

उत्तर 4- *A.लक्ष्मी*

पहले शिवबाबा की अव्यभिचारी भक्ति चलती है। फिर देवताओं की मूर्तियां बनाते हैं। उनके फिर बड़े-बड़े चित्र बनाते हैं। फिर पाण्डवों के बड़े-बड़े चित्र बनाते हैं। यह सब पूजा के लिए चित्र बनाते हैं। *लक्ष्मी की पूजा 12 मास में एक बार करते हैं।* जगत अम्बा की पूजा रोज़ करते रहते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है तुम्हारी डबल पूजा होती है।

उत्तर 5- *A.नर्क*

ऐसे नहीं, ईश्वरीय जन्म मनाकर फिर जाए आसुरी जन्म में पड़े। ऐसा भी होता है। ईश्वरीय जन्म मनाते-मनाते फिर रफू-चक्कर हो जाते हैं। आजकल तो मैरेज डे भी मनाते हैं, शादी को जैसे कि अच्छा शुभ कार्य समझते हैं। *जहन्नुम अर्थात नर्क में जाने का भी दिन मनाते हैं।*

उत्तर 6- *D. A और B*

रूहानी बाप को भी एक ही बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर शरीर लेना पड़ता है। *यह संगमयुग भी है, इनको पुरुषोत्तम युग भी कहेंगे* क्योंकि इस संगमयुग के बाद फिर सतयुग आता है। *सतयुग को भी पुरुषोत्तम युग कहेंगे।* बाप आकर स्थापना भी पुरुषोत्तम युग की करते हैं। संगमयुग पर आते हैं तो जरूर वह भी पुरुषोत्तम युग हुआ। यहाँ ही बच्चों को पुरुषोत्तम बनाते हैं।

उत्तर 7- *C.निराकार गॉड फादर*

बाप को अपना चोला तो है नहीं, इसलिए इनको निराकार गॉड फादर कहा जाता है। बाकी सब हैं साकारी। इनको कहा जाता है इनकारपोरियल गॉड फादर, इनकारपोरियल आत्माओं का। तुम आत्मायें भी वहाँ रहती हो। बाप भी वहाँ रहते हैं। परन्तु है गुप्त।

उत्तर 8- *C.सतयुग में*

शान्ति तब है जब एक धर्म है। जो धर्म बाप स्थापन करते हैं। बाद में जब और-और धर्म आते हैं तो अशान्ति होती है। *सम्पूर्ण शान्ति सतयुग में होती है।* 25 परसेन्ट पुरानी सृष्टि होगी तो कुछ न कुछ खिट-खिट होगी। दो कला कम होने से शोभा कम हो गई। स्वर्ग में बिल्कुल शान्ति, नर्क में है बिल्कुल अशान्ति।

उत्तर 9- *C.ईश्वरीय सन्तान हैं*

सदा स्मृति रखनी है कि हम हैं ईश्वरीय सन्तान। हमें क्षीरखण्ड होकर रहना है। किसी को भी दु:ख नहीं देना है। सतयुग में क्षीरखण्ड होते हैं, यहाँ क्षीरखण्ड होना तुम सीखते हो तो बहुत प्यार से रहना चाहिए।

उत्तर 10- C.*तुम विश्व में शान्ति स्थापन करने के निमित्त हो*

मीठे बच्चे - *तुम विश्व में शान्ति स्थापन करने के निमित्त हो, इसलिए तुम्हें कभी अशान्त नहीं होना चाहिए।

* शान्ति और अशान्ति की बात यहाँ विश्व पर ही होती है। वह तो है ही निर्वाणधाम, जहाँ शान्ति-अशान्ति का प्रश्न ही नहीं उठ सकता है।

उत्तर 11- *A.अमृतवेले उठकर बाप को याद करो*

बाप का मुख्य फरमान है कि बच्चे अमृतवेले (सवेरे) उठकर बाप को याद करो, इस मुख्य फरमान को पालन करते हैं, सवेरे-सवेरे स्नान आदि कर फ्रेश हो मुकरर टाइम पर याद की यात्रा में रहते हैं, बाबा उन्हें सपूत वा फरमानबरदार कहते हैं, वही जाकर राजा बनेंगे।

उत्तर 12- *B.झाड़ू लगायेंगे*

जो स्नान आदि कर फ्रेश हो आयें फिर भी टाइम पर नहीं आते तो उनको फरमानबरदार नहीं कह सकते हैं। लौकिक बाप को भी सपूत और कपूत बच्चे होते हैं ना। बेहद के बाप को भी होते हैं। सपूत जाकर राजा बनेंगे,

कपूत जाकर झाड़ू लगायेंगे। मालूम तो सब पड़ जाता है ना।

उत्तर 13- *D. A और C*

बाप कहते हैं तुम दैवी धर्म के हो ना। *तुमने ही 84 का चक्र लगाया है।* सब सूर्यवंशी भी 84 जन्म थोड़ेही लेते हैं। पीछे आते रहते हैं ना। नहीं तो फट से सभी आ जाएं। इस समय तुम बच्चे ही सारे सृष्टि के राज़ को जानते हो। *सतयुग में है डीटी डिनायस्टी। रावण राज्य में फिर है आसुरी डिनायस्टी।*

उत्तर 14- *B.हम आत्मा हैं,इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं*

इस समय सब पुरुषार्थी हैं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। मुख्य आंखों की ही बात है। *हम आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं - यह पक्का अभ्यास चाहिए।* जब तक रावण राज्य है, तब तक युद्ध चलता रहेगा। पिछाड़ी

में कर्मातीत अवस्था होगी। आगे चलकर तुमको फीलिंग आयेगी, समझते जायेंगे।

उत्तर 15- *D.ब्राह्मण नहीं ठहरा*

ब्राह्मण तो कोई सच्चे भी हैं, तो झूठे भी हैं। आज सच्चे हैं, कल झूठे बन जाते हैं। *विकार में गया तो ब्राह्मण नहीं ठहरा।* फिर शूद्र का शूद्र हो गया। आज प्रतिज्ञा करते कल विकार में गिर असुर बन जाते हैं। अब यह बातें कहाँ तक बैठ समझायें। इनसे पेट तो नहीं भरेगा वा मुख मीठा नहीं होगा।

उत्तर 16- *A.शांति नहीं हो सकती*

जहाँ भय है वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। तो सुख के साथ यह दुख अशान्ति के कारण भी हैं ही। लेकिन आप सर्व शक्तियों के खजाने से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिमान बच्चे दुखों के कारण का निवारण करने

वाले, हर समस्या का समाधान करने वाले समाधान स्वरूप हो इसलिए चिंता और भय से मुक्त हो।